कोरोना संक्रमण से बचाव की सामग्री वितरित

करौली. स्वास्थ्यकर्मियों को मास्क, सेनेटाइजर वितरित करते संस्था के सदस्य।

करौली @ पत्रिका. डांग विकास संस्थान की ओर से सोमवार को स्वास्थ्यकर्मियों को कोरोना से बचाव के लिए सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि कोरोना महामारी की दूसरी लहर में स्वास्थ्य कर्मियों व आमजन को इस महामारी से बचाव के लिए मास्क, सेनेटाइजर और पीपीई किट का वितरण किया जा रहा है। वहीं जरुरतमंद को खाद्य सामग्री बांटी गई। सोमवार को प्राथमिक स्वास्थ्य गणेश गेट करौली व आदर्श प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कल्याणी के समस्त स्टाफ को मास्क, सेनेटाइजर, केप का वितरण किया गया।

साथ ही गांव कल्याणी, राजौर, मामचारी, करसाई के सिलिकोसिस पीड़ितों को दवाइयां व मास्क बांटे गए। इस मौके पर कार्यक्रम समन्वयक सहित विक्रम सिंह जाटव, विक्रम सिंह गुर्जर आदि उपस्थित रहे।

राजस्थान पत्रिका
1/6/2021

सैनेटाइजर व पीपीई किट का वितरण

न्यूज सर्विस/नवज्योति, करौली। डांग विकास संस्थान करौली के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि संस्थान द्वारा कोरोना महामारी की दूसरी लहर में स्वास्थ्य कर्मियों तथा आमजन

को इस महामारी के प्रभाव से बचाव हेतु निरंतर कार्य कर रही है। राजेश कुमार ने बताया कि संस्थान द्वारा मास्क-सैनिटाइजर वितरण के अलावा गरीब-जरूरतमंद परिवारों को खाद्य सामग्री का वितरण भी किया जा रहा है। राजेश कुमार ने बताया कि इसके अलावा संस्थान द्वारा कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है। राजेश कुमार ने बताया कि आज सोमवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गणेश गेट करौली एवं आदर्श प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कल्याणी के समस्त स्टाफ को मास्क-सैनिटाइजर-केप का वितरण किया गया तथा साथ ही गांव कल्याणी, राजौर, मामचारी, करसाई के सिलिकोसिस पीड़ितों को दवाइयों तथा मास्क का वितरण किया।

नवज्योति
1/6/2021

मास्क और पीपीई किट का किया वितरण

न्यूज सर्विस/नवज्योति, करौली। डांग विकास संस्थान करौली के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि संस्थान द्वारा कोरोना महामारी की दूसरी लहर में स्वास्थ्य कर्मियों व आमजन को इस महामारी से बचाव हेतु निरंतर कार्य कर रही है। कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि मास्क-सैनिटाइजर वितरण के अलावा डांग विकास संस्थान करौली द्वारा गरीब परिवारों को खाद्य सामग्री का वितरण भी किया जा रहा है तथा साथ ही कोरोना से बचाव हेतु किए जा रहे वैक्सीनेशन के लिए जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है। संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि आज राजकीय सामान्य चिकित्सालय करौली के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डा. दिनेश चंद गुप्ता एवं समस्त नर्सिंग स्टाफ, सिटी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्टेडियम के पास करौली, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र विनेगा व कोटे छावर के समस्त स्टाफको मास्क, सैनिटाइजर एवं पीपीई किट केप का वितरण किया गया।

दैनिक नवज्योति 28/5/2021

12/3/2021

खुलासा • खानों में धूल से बढ़ती सिलिकोसिस बीमारी से बचाव के लिए डांग विकास संस्थान ने खास टांकी का किया नवाचार

60% से ज्यादा धूल कणों को रोकने में कारगर 'करौली टांकी'

करौली। खान व अन्य कारखानों में उड़ती धूल श्वसन के साथ फेंफडों तक पहुंचने से श्रमिकों में सिलिकोसिस जैसी लाईलाज बीमारी निरंतर पैर पसार रही है। इसकी रोकथाम व बचाव की दिशा में देसी जुगाड वाली तकनीक से निर्मित खास औजार "करौली टांकी' खासी कारगर है। इसका खुलासा हाल ही अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त रिसर्च संस्था (हैल्थ वर्क प्लेस) की रिपोर्ट में हुआ है। जिसमें उल्लेख है कि मैन्युअल वर्क वाली खदानों में काम करने वाले खनिकों में 60% से ज्यादा धूल कणों को रोकने में यह बेहद कारगर है। लिहाजा, 5 से 10 रुपए के महज खर्च से तैयार इस करौली टांकी का इस्तेमाल करने से करौली के 24 हजार सहित प्रदेश के 2,38,817 से ज्यादा खान श्रमिकों को सिलिकोसिस से बचाव में यह मील का पत्थर भी साबित होगी। बहरहाल, करौली-धौलपुर व बिजौलिया की 15-15 खदानों में 300 खनिकों को टूल का डेमो रास आने पर रिसर्चर एनआईएमएच के पूर्व डायरेक्टर डॉ.पी.के.सिसोदिया की सलाह पर नवाचार करने वाली करौली की डांग विकास संस्था ने इसका पेटेंट कराने की कवायद भी शुरू कर दी है। राज्य सरकार ने सिलिकोसिस रोगियों के स्वास्थ्य जांच के लिए खनन बहुल जिलों में विशेष कैंप के अलावा न्यूमोकॉनियोसिस बोर्ड भी गठित किए हुए हैं और वर्ष 2019 में राजस्थान सिलिकोसि नीति भी बनाई है। ताकि, खान व पत्थर व्यवसाय से जुडे मजदूरों को लाभांवित कर समाज की मुख्यधारा से जोडा जा सके। ऐसे में खनन श्रमिकों के हित में कार्यशील स्वयंसेवी संस्था डांग विकास संस्थान करौली के कार्यक्रम समंवयक राजेश शर्मा ने जुगाड़ तकनीक से कम खर्चे में धूल नियंत्रण का खास औजार तैयार किया।

करौली सहित 23 जिलों में खनिज संपदा के प्रचुर भंडार

राज्य के प्रमुख चार जिलों करौली, धौलपुर, दौसा व भरतपुर में खनन श्रमिकों, खनन श्रमिक विधवाओं, निर्माण श्रमिकों, क्रेशर पर कार्य करने वाले श्रमिकों के अधिकारों, आजीविका विकास कौशल, अधिकारिता व व्यवसायिक स्वास्थ्य पर उभर रहे खतरे तथा सिलिकोसिस जैसे गंभीर मुद्दों पर डांग विकास संस्थान, करौली (एनजीओ) एक दशक से विशेष रूप से कार्य कर रहा है। संस्था सचिव डॉ.विकास भारद्वाज ने बताया कि राजस्थान के करौली सहित 23 जिलों में खनिज संपदा के प्रचुर भंडार हैं। सिविल सोसायटीज सर्वे के आधार पर राज्य में करीब 30 से 35 लाख परिवार खनन कार्य से जुडे हुए हैं।

खनिकों की पीड़ा को महसूस कर दो साल पूर्व डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समंवयक राजेश शर्मा ने खनन करते समय उड़ने वाली धूल को रोकने के लिए धूल नियन्त्रण औजार (टूल) तैयार किया। खान मजदूरों को इस टूल का उपयोग करने का खदानों में पहुंचकर प्रशिक्षण भी दिया।

एचडब्ल्यूपी रिसर्च में करौली टांकी खनन श्रमिकों में 60 फीसदी से ज्यादा धूल कणों को रोकने में कारगर बताई गई है। इसमें खर्चा भी बेहद कम हैं। इस टांकी का उपयोग कर लाखों खान श्रमिक सिलिकोसिस से भी बच सकते हैं। इसका संस्था जल्द ही पेटेंट भी करवाएगी।

-डॉ.विकास भारद्वाज, सचिव, डांग विकास संस्थान, करौली

12 मार्च दैनिक भास्कर - 2021.

दैनिक भास्कर 5/2/21

शिविर • डांग विकास संस्थान करौली की ओर से सिलिकोसिस पीड़ितों की जांच

उप स्वास्थ्य केंद्र कल्याणी के शिविर में 46 खनन श्रमिकों व सिलिकोसिस पीड़ितों को मिला लाभ

कार्यालय संवाददाता | करौली

खनन श्रमिकों व सिलिकोसिस पीडितों की सुविधा के लिए गुरुवार को गांव कल्याणी के उप स्वास्थ्य केंद्र पर पॉल हेमलिन फाउंडेशन के सहयोग से डांग विकास संस्थान,करौली की ओर से चिकित्सा उपचार शिविर लगा। जिसमें क्षेत्र के 46 सिलिकोसिस पीडितों ने निशुल्क जांच,उपचार व दवाईयों का लाभ लिया। डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि सिलिकोसिस उपचार शिविर में गांव राजौर, करसाई, कल्याणी, कोटे व मामचारी के खनन मजदूर व सिलिकोसिस पीडितों ने भाग लिया। जिनमें से 46 सिलिकोसिस पीडितों का डॉ. हेमलता मीना ने लक्षणात्मक उपचार किया। उन्होंने बताया कि शिविर में सिलिकोसिस पीडितों को कफ सीरप, सांस लेने वाला पंप, प्रोटीन पावडर व टेबलेट्स निःशुल्क दी गईं। साथ ही सिलिकोसिस पीडितों को इस लाइलाज बीमारी से बचाव के लिए उचित परामर्श व दवाईयों का सेवन नियमित इस्तेमाल करने और स्वस्थ्य दिनचर्या के लिए खानपान का विशेष ध्यान रखने की सीख भी दी गई। खास यह है कि मरीज व पीडितों को नशा नहीं करने और कोरोना वायरस से बचाव के लिए नियमित सैनेटाजर से हाथ धोने व मास्क का अनिवार्य रूप से उपयोग करने की भी सलाह दी गई। शिविर में डांग विकास संस्थान के परियोजना अधिकारी विक्रम सिंह गुर्जर, महेशचंद, विक्रम जाटव ने दवाई इस्तेमाल करने के तरीकों को समझाया। डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार, विक्रम सिंह गुर्जर, महेश जाटव और प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र से डॉ. हेमलता मीना, एएनएम सुमन चतुर्वेदी, सहायक कर्मचारी रामस्वरूप माली व राधेश्याम ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

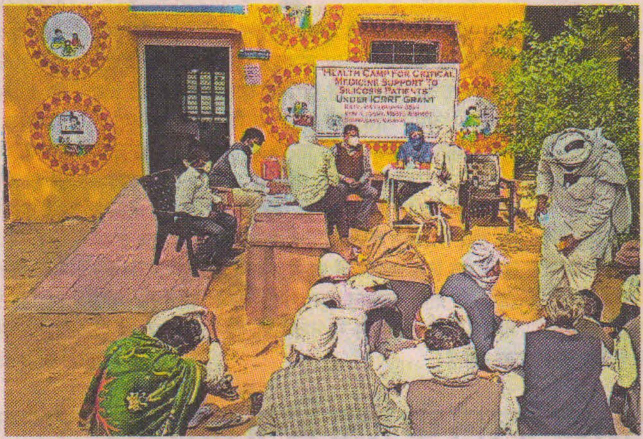

करौली। उप स्वास्थ्य केंद्र कल्याणी में खनन मजदूरों व सिलिकोसिस पीड़ितों के लिए डांग विकास संस्थान के सहयोग से लगा उपचार शिविर।

उपकरण किए वितरित

हिंडौनसिटी। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में समग्र शिक्षा अभियान के तहत दिव्यांग विधार्थियों के लिए अभिभावक परामर्श दात्री कार्यक्रम व उपकरण वितरण कार्यक्रम आयोजित किया। मुख्य अतिथि अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी दयाल सिंह सोलंकी ने 13 ट्राई साइकिल, 18 व्हील चेयर, 8 हियरिंग एड, 3 सीपी चेयर, वैशाखी, रौलेटर, कैलीपर, डीजी प्लेयर आदि उपकरण वितरित किए।

सिलिकोसिस पीड़ितों को दिया परामर्श, बांटी दवाई

करौली @ पत्रिका. पॉल हैमलिन फाउण्डेशन के सहयोग से डांग विकास संस्थान के सहयोग से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बिनेगा में खनन मजदूरों व सिलिकोसिस पीड़ितों के लिए उपचार शिविर का आयोजन किया गया। संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि सिलिकोसिस उपचार शिविर में बिनेगा, चैनपुर, मचेट, टटवाई व मामचारी गांव के खनन मजदूर व सिलिकोसिस पीड़ितों ने भाग लिया। शिविर में डॉ. शेरसिंह मीना ने पीड़ितों की जांच की। इसके बाद संस्थान की ओर से सिलिकोसिस पीड़ितों को कफ सीरप, सांस लेने वाला पम्प, प्रोटीन पाउडर तथा गोलियां निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं। कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने पीड़ितों को परामर्श दिया। साथ ही दवाईयों के नियमित सेवन की सलाह दी। शिविर में डांग विकास संस्थान के परियोजना अधिकारी विक्रम सिंह गुर्जर, विक्रम जाटव, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से डॉ. शेरसिंह मीना, मेल नर्स मारूतिनन्दन, महेश कुमार, पवन कुमार व एलटी मुकेश कुमार आदि मौजूद थे।

पत्रिका - २५/१/२१

सिलिकोसिस उपचार शिविर

न्यूज सर्विस/नवज्योति, करौली। पॉल हेमलिन फाउण्डेशन के सहयोग से डांग विकास संस्थान करौली द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र विनेगा में खनन मजदूरों व सिलिकोसिस पीडितों के लिए उपचार शिविर का आयोजन किया गया। डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि सिलिकोसिस उपचार शिविर में विनेगा,

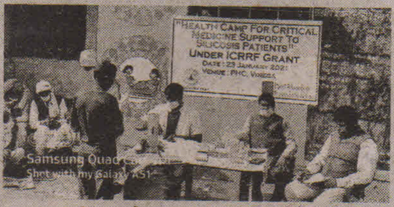

चैनपुर, मचेट, टटवाई व मामचारी गांव के खनन मजदूर व सिलिकोसिस पीडितों ने भाग लिया जिसमें से 43 सिलिकोसिस पीडितो का लक्षणात्मक उपचार डॉ. शेरसिंह मीना के बताये अनुसार डांग विकास संस्थान की ओर से सिलिकोसिस पीडितों को शिविर में कफ सीरप, सांस लेने वाला पम्प, प्रोटीन पाउडर तथा गोलियां निःशुल्क उपलब्ध कराई गई।

दैनिक नवज्योति - २५/१/२१

सिलिकोसिस उपचार शिविर आयोजित

करौली, (नि.सं.)। पॉल हेमलिन फाउण्डेशन के सहयोग से डांग विकास संस्थान, करौली द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र विनेगा में खनन मजदूरों व सिलिकोसिस पीडितों के लिए उपचार शिविर का आयोजन किया गया।

डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि सिलिकोसिस उपचार शिविर में विनेगा, चैनपुर, मचेट, टटवाई व मामचारी गांव के खनन मजदूर व सिलिकोसिस पीडितों ने भाग लिया। शिविर में 43 सिलिकोसिस पीडितों का लक्षणात्मक उपचार डा. शेरसिंह मीना के बताये अनुसार डांग विकास संस्थान की ओर से सिलिकोसिस पीडितों को शिविर में कफ सीरप, सांस लेने वाला पम्प, प्रोटीन पाउडर तथा गोलिया निःशुल्क उपलब्ध कराई गई।

राष्ट्रदूत - २५/१/२१

कार्यशाला में बताया टीकाकरण का महत्व

करौली. अरावली जयपुर व यूनिसेफ के सहयोग से डांग विकास संस्थान करौली के तत्वावधान में क्षेत्र के पंचायती राज जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी की नियमित टीकाकरण पर कार्यशाला हुई।

टीकाकरण की जानकारी

डांग विकास सस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परीता के उप स्वास्थ्य केंद्र आंगनबाड़ी केंद्रों पर आयोजित किए जाने वाले टीकाकरण सत्रों में वंचित गर्भवती महिलाओ व बच्चों को टीकाकरण से जोड़ने के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही टीकाकरण के लाभों के बारे में भी बताया गया।

बीमारियों में टीका अहम

गर्भवती व बच्चों को कई जानलेवा बीमारियों टीवी, हैपेटाइटिस बी, पोलियो गलघोंटू, काली खांसी, टिटनेस खसरा रूबेला से बचाने में टीके महत्वपूर्ण है। आंगनबाड़ी केंद्र पर पंजीकरण कराकर ममता कार्ड बनवाएं, जिससे जननी सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के बारे में भी बताया गया। इस अवसर पर सरपंच राजंती मीना, वार्ड पंच मुकेश मीना, आशा सहयोगिनी बर्फी देवी, संस्था के विक्रम सिंह गुर्जर ने विचार व्यक्त करते हुए शत-प्रतिशत टीकाकरण पर जोर दिया।

राजस्थान पत्रिका 21/01/2021

परीता में जनप्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी व आशा-सहयोगनियों से शत-प्रतिशत टीकाकरण पर दिया जोर

कार्यालय संवाददाता | करौली

गांव परीता में बुधवार को जनप्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी व आशा-सहयोगनियों की टीकाकरण को लेकर कार्यशाला हुई।

जिसमें शत-प्रतिशत व नियमित टीकाकरण पर जोर देते हुए विस्तार से चर्चा की गई। दरअसल, अरावली जयपुर व यूनिसेफ के सहयोग से डांग विकास संस्थान, करौली के तत्वावधान में क्षेत्र के 30 प्रभावशालियों के साथ एक दिवसीय नियमित टीकाकरण पर उन्मुखीकरण किया गया। डांग विकास सस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परीता के उप स्वास्थ्य केंद्र, आंगनबाड़ी केंद्रों पर आयोजित किए जाने वाले टीकाकरण सत्रों में वंचित गर्भवती महिलाओं व बच्चों को टीकाकरण से जोड़ने के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही टीकाकरण के लाभों के बारे में जानकारी दी।

करौली | गांव परीता में जनप्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी व आशा-सहयोगनियों की कार्यशाला में टीकाकरण का महत्व बताया।

उन्होंने बताया कि गर्भवती मां व बच्चों को कई जानलेवा बीमारियों जैसे टीवी, हेपेटाइटिस बी, पोलियो, गलघोंटू, काली खांसी, टिटनेस, खसरा, रूबेला से बचाने में रक्षा करते हैं। इसलिए हम सभी का दायित्व है कि हमारे समाज व परिवार में कोई भी गर्भवती मां व बच्चा टीकाकरण से नहीं छूटे और अपने आंगनबाड़ी केंद्र पर पंजीकरण करवाकर ममता कार्ड बनवाएं। जिससे जननी सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना व सरकार की अन्य लाभकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला में टीकाकरण शत-प्रतिशत हो, इसके लिए विशेष रूप से चर्चा की गई। इस दौरान सरपंच राजंती मीणा, वार्ड पंच मुकेश मीणा, आशा सहयोगिनी बर्फी देवी, संस्था के विक्रम सिंह गुर्जर ने भी अपने विचार व्यक्त कर शत-प्रतिशत टीकाकरण करने पर जोर दिया।

डांग विकास संस्थान ने सरकार को भेजी सर्वे रिपोर्ट • लॉकडाउन में प्रवासी श्रमिकों को योजनाओं के लाभ देने के आए चौंकाने वाले तथ्य

कोरोना काल में 616 में से 358 परिवार अब रोजगार से जुड़े, 112 परिवारों को मिली खाद्य किट व 54 परिवारों को मनरेगा में काम

सुखदेव डागुर | करौली

कोरोना संकटकाल व लॉकडाउन के दौरान प्रवासी श्रमिकों की घर वापसी, रोजगार छिनने की पीड़ा व सरकार से मिलने वाले लाभों की धरातलीय हकीकत चौंकाने वाली सामने आई है। करौली के डांग विकास संस्थान की टीम ने डेढ़ माह तक लगातार चयनित 20 गांवों में प्रवासी मजदूरों का सर्वे किया। मूल्यांकन प्रपत्र में जुटाई गई जानकारी के अनुसार 616 परिवारों के 3407 सदस्यों में से 848 प्रवासी मजदूर मिले। जिनमें से 358 परिवार अब स्थानीय स्तर पर ही काम-धंधे से जुड़ गए हैं, वहीं 174 परिवारों के श्रमिकों ने रोजगार के लिए वापिस काम पर जाने की इच्छा जताई। कोरोना काल में सिर्फ 112 परिवारों को ही सरकार व संस्थागत रूप से खाद्य सामग्री की किट्स मिल पाईं। जबकि, मनरेगा में सिर्फ 54 परिवारों के लोगों को ही काम मिल पाया। सरकारी दावों की पोल खोलने वाले इन चौंकाने वाले तथ्यों की रिपोर्ट संस्थान ने ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग से संबद्ध एसोसिएशन फॉर रूरल एडवांसमेंट थ्रो वॉलेंट्री एक्शन एंड लोकल इनवॉल्वमेंट (अरावली) संस्था के जरिये राज्य सरकार को भेजी गई है।

डांग विकास संस्थान के सचिव डॉ.विकास भारद्वाज व कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार की मॉनिटरिंग में सर्वे टीम के सदस्य विक्रमसिंह, बृजभूषण शर्मा, महेशचंद व विक्रम जाटव आदि ने 20 गांवों में प्रपत्र फार्म से जानकारी जुटाई।

करौली| गांव आरामपुरा-महू में प्रवासी मजदूरों का डांग विकास संस्थान की टीम ने किया सर्वे।

पात्र परिवारों को खाद्य सामग्री मुहैया कराई

सर्वे में मिले पात्र प्रवासी श्रमिक, गरीब खनिकों के परिवार व विधवाओं को डांग विकास संस्थान,करौली ने घर-घर जाकर खाद्य सामग्री की किटों का वितरण किया। ताकि, गरीब श्रमिक परिवारों को भूखा नहीं रहना पड़े और भोजन मिल सके। कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार शर्मा ने बताया कि चयनित 20 गांवों में दो माह में न्यूनतम तीन बार 815 किट्स बांटी गई। किट में दो किलो सरसों का तेल, एक किलो सोयाबीन, मूंग व चना दाल, 500 ग्राम वाशिंग पाउडर, नमक, धनिया, मिर्च,हल्दी पाउडर व 250 ग्राम चाय का पैकेट और एक किलोग्राम चीनी आदि दी गई।

इन 20 गांवों में किया सर्वे

गांव कोसरा, कोटा, ससेडी, बिनेगा, राजौर, सौरया, कल्याणी, मामचारी, आरामपुरा, मचेट, भीकमपुरा, छावर, डूडापुरा, भांकरी, मंडीली, गुवरेंडा, भंवरपुरा, मांची, गढीगांव व करसाई में डांग विकास संस्थान ने 15 जून से 31 जुलाई तक प्रवासी मजदूरों का सर्वे मूल्यांकन किया। इन गांवों में 616 परिवारों में 3407 सदस्यों में 848 प्रवासी मजदूर मिले। 199 परिवार ही सरकारी राशि से लाभांवित हुए, प्रवासी परिवारों को सरकार से अन्य कोई सहायता नहीं मिली। सिर्फ 370 परिवारों का नाम खाद्य सुरक्षा योजना में और 112 परिवारों को संस्था या सरकार द्वारा खाद्य सामग्री किट मुहैया हो पाई। 358 परिवारों को स्थानीय स्तर पर मजदूरी कार्य मिला, जबकि मनरेगा में प्रवासी श्रमिकों को काम मुहैया कराने के दावों के विपरीत सिर्फ 54 परिवार ही मनरेगा से लाभांवित हो पाए।

सरकारी लाभ वाले प्रवासी श्रमिकों की संख्या

20 गांवों के सर्वे मूल्यांकन के तथ्यों के मुताबिक सरकारी लाभ वाले प्रवासी श्रमिकों के परिवार- 199, खाद्य सुरक्षा में नाम- 370, राहत सामग्री का लाभ- 112, अन्य व्यवसाय परिवार संख्या- 358, स्थानीय प्रवासी परिवार-2, कुल प्रवासी संख्या- 848, मनरेगा में 13 से कम दिन काम वाले परिवार- 34, मनरेगा में 14 दिन से ज्यादा काम वाले परिवार- 22, कोरोना काल में ही पुनः काम पर वापिस जाने वाले प्रवासी श्रमिक परिवार-25, प्रवासी श्रमिक जो हालात सामान्य होने पर वापिस जाना चाहते हैं-174, वे प्रवासी श्रमिक परिवार जो अब स्थानीय स्तर पर ही काम चाहते हैं- 224 संख्या है।

राज्य सरकार को रिपोर्ट प्रेषित कर दी

कोरोनाकाल में प्रवासी श्रमिकों पर संस्थान ने सर्वे किया और राज्य के ग्रामीण विकास पंचायती राज मंत्रालय से संबद्ध अरावली संस्था के माध्यम से राज्य सरकार को रिपोर्ट प्रेषित कर दी है। ताकि, धरातलीय स्थिति की जानकारी से कार्ययोजना की जा सके।

-डॉ.विकास भारद्वाज, मुख्य कार्यकारी अधिकारी व सचिव, डांग विकास संस्थान, करौली

दैनिक भास्कर 27/10/2020

उत्कृष्ट सेवा कार्य करने वालों को डांग विकास संस्थान ने कोरोना योद्धा सम्मान से नवाजा

कार्यालय संवाददाता | करौली

कोरोनाकाल में उत्कृष्ट सेवा कार्य करने वाले कई अधिकारी-कर्मचारी व समाजसेवियों को बुधवार को यहां वैशालीनगर के डांग विकास संस्थान के कार्यालय में कोरोना योद्धा सम्मान से नवाजा गया। डांग विकास संस्थान के सचिव डॉ.विकास भारद्वाज एवं कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार शर्मा ने सम्मानित जनों को माला पहनाकर एवं प्रशस्ति-पत्र व स्मृति चिह्न भेंटकर पुरस्कृत किया।

सम्मान समारोह के अवसर पर संस्था के सचिव डॉ.विकास भारद्वाज ने संस्था के कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि संस्था पूर्वी राजस्थान के जिलों में सिलिकोसिस पीडितों के अलावा कोरोना महामारी में गरीबतम परिवारों के लिए राहत खाद्य सामग्री किटो का वितरण एवं कोरोना जागरूकता व स्क्रीनिंग शिविरों का आयोजन कर रही है। करौली शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में

करौली | डांग विकास संस्थान कार्यालय में कोरोना कर्मवीरों को मिला कोरोना योद्धा सम्मान।

कोरोना वैश्विक महामारी (कोविड-19) में अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों की सेवा कर रहे कर्मवीरों का संस्था द्वारा हौंसला अफजाई बतौर सम्मान करने की पहल अभी भी जारी है। कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि बुधवार को कोरोना कर्मवीरों में माइनिंग एसोसिएशन के पदाधिकारी भूपेंद्र भारद्वाज, पूरन प्रताप चतुर्वेदी, मदन मोहन पचौरी, अध्यापक गंगाराम प्रजापत, विनोद कुमार शर्मा, रामदयाल मीणा, बाल कल्याण समिति के सदस्य फसजे अहमद, अनिल शर्मा, दूरसंचार निगम अधिकारी अक्षय कुमार जिंदल, राशन डीलर बालकृष्ण को कोरोना वैश्विक महामारी में प्राणी कल्याण के लिए किये गये सहयोग के लिये कोरोना योद्धा सम्मान पत्र से सम्मानित किया है।

कोरोना वैश्विक महामारी में संस्थान द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना जागरुकता शिविरों के साथ थर्मल स्क्रीनिंग, कोरोना से बचाव की ज़ानकारी के साथ प्रवासी मजदूरों को राशन सामग्री का वितरण भी किया जा रहा है। इस दौरान संस्थान के परियोजना अधिकारी विक्रम सिंह गुर्जर, राजकुमार गुप्ता, बृजभूषण शर्मा, महेश चंद व विक्रम सिंह जाटव भी उपस्थित रहे।

भास्कर- 8/10/2020

कोरोना कर्मवीरों का किया सम्मान

करौली. सम्मान समारोह के मौके पर उपस्थित सदस्य।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

करौली. डांग विकास संस्थान करौली की ओर से बुधवार को कोरोना कर्मवीरों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्था के सचिव डॉ. विकास भारद्वाज ने संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में जानकारी दी। भारद्वाज ने बताया कि संस्था द्वारा सिलिकोसिस पीड़ितों के अलावा कोरोना महामारी के चलते जरुरतमंदों को खाद्य सामग्री की किटों का वितरण किया गया। इसी क्रम में कोरोना के दौरान सेवा करने वाले कर्मवीरों का भी संस्था द्वारा सम्मान किया जा रहा है। इसी क्रम में बुधवार को माइनिंग एसोसिएशन के पदाधिकारी भूपेंद्र भारद्वाज, पूरन प्रताप चतुर्वेदी, मदनमोहन पचौरी, अध्यापक गंगाराम प्रजापत, विनोद कुमार शर्मा, रामदयाल मीणा बाल कल्याण समिति के सदस्य फजले अहमद, अनिल शर्मा, समाजसेवी हनीफ, दूरसंचार निगम अधिकारी अक्षय कुमार जिंदल, राशन डीलर बालकृष्ण को सम्मानित किया गया। संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि संस्थान द्वारा कोरोना महामारी में थर्मल स्क्रीनिंग के साथ कोरोना के बचाव की जानकारी भी दी जा रही है। इस मौके पर संस्था के परियोजना अधिकारी विक्रम सिंह गुर्जर, राजकुमार गुप्ता, बृजभूषण शर्मा, महेश चंद, विक्रम सिंह जाटव आदि उपस्थित रहे।

पत्रिका 8/10/2020

सिलिकोसिस बीमारी का बचाव ही उपाय

सिलिकोसिस रोकथाम को लेकर जागरूकता पखवाड़ा आयोजित

केसी तिवाड़ी

करौली, (पंजाब केसरी): डांग विकास संस्थान करौली की ओर से सिलिकोसिस रोक थाम जागरूकता अभियान पकवाड़ा एक से 15 फरवरी तक करौली जिले के खनन बाहुल्य गांव में चलाया जा रहा है। डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि अभियान के अंतर्गत आज राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नंबर 6 शिकारगंज में विद्यालय के 500 बच्चों सहित उनके अभिभावक खान मजदूरों को सिलिकोसिस बीमारी टीबी में अंतर टीबी के उपचार के बारे में बताया कि टीबी का इलाज लेने पर ठीक हो जाता है, लेकिन सिलिकोसिस बीमारी लाइलाज है। इसका कोई इलाज नहीं है और यह सिलिका मिश्रित धूल भरे वातावरण में काम करने से होती है। इसका बचाव ही उपचार है, धूल भरे वातावरण कार्य के दौरान अगर बीमारी होती है तो सिलिकोसिस की जांच करवाएं जो ऑनलाइन आवेदन किया जाता है, उसके बाद जांच पर जाते ही डॉक्टर को अपने कार्य के इतिहास के बारे में अवश्य बताएं, जिससे व्यवसायिक जनित बीमारी का पता चलेगा और उसके निदान किया जा सकेगा। संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने राजस्थान सरकार की ओर से सिलिकोसिस पुनर्वास नीति के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि सिलिकोसिस पीड़ित व मृतक के आश्रित को 500000 सिलिकोसिस पीड़ित को 1500 पेंशन, खाद्य सुरक्षा पालनहार योजना का लाभ दिया जाता है।

करौली राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नंबर 6 शिकारगंज में सिलिकोसिस बीमारी की जानकारी देते हुए डांग विकास संस्थान के समन्वय राजेश कुमार। (छाया: पंजाब केसरी)

डांग संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि सिलिकोसिस जैसी लाइलाज बीमारी से बचाव के लिए डांग विकास संस्थान की ओर से एक डिवाइस तैय़ार की गई है। सभी मजदूर खान में कार्य करते समय उसका उपयोग करें, जिससे 50 प्रतिशत सिलिका धूल रोकने में सहायक है।

उन्होंने बताया कि इस डिवाइस का उपयोग करौली जिले में 700 मजदूरों की ओर से किया जा रहा है। जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इस अवसर पर सुरक्षित खनन पर तैयार की गई टूल के उपयोग करते हुए मजदूरों को फिल्म के माध्यम से बताया गया। उन्होंने खान में काम करते समय इस डिवाइस का उपयोग करने लिए आग्रह किया है। जिससे सिलिकोसिस जैसी लाइलाज बीमारी को बचाया जा सके। कार्यक्रम में डांग का संस्था के विक्रम सिंह, विद्यालय के प्रधानाचार्य गोविंद लाल शर्मा, अध्यापकगण बच्चे तथा अभिभावकों खान मजदूरों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य गोविंद लाल शर्मा की ओर से डांग विकास संस्थान की ओर से सिलिकोसिस से बचाव की पहल को सराहनीय बताया।

दैनिक नवज्योति - 6/2/20

कोसरा में 120 दलित परिवारों में 40 विधवाएं, सांकरा के भी ऐसे ही हाल

सिलिकोसिस ने उजाड़े सुहाग, छीनी खुशियां

एक्सक्लूसिव

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

करौली. इलाके में पत्थर खदानों पर मजदूरी करते-करते सैंकड़ों मजदूर सिलिकोसिस की चपेट में आ रहे हैं। इस बीमारी से आए दिन मौतें हो रही हैं और अनेक पीड़ित मौत के कगार पर हैं। राज्य सरकार ने सिलिकोसिस पीड़ितों को राहत देने की मंशा से नई सिलिकोसिस नीति लागू तो की है लेकिन इस नीति का असर अभी धरातल पर नहीं दिखा है। ऐसे में सिलिकोसिस पीडितों के लिए सरकार के बचाव और राहत के उपाय केवल कागजों तक सीमित हैं।

इधर इस जानलेवा बीमारी के कहर से करौली, मण्डरायल, मासलपुर इलाके के अनेक परिवार संकट के दौर में हैं। करौली क्षेत्र में पत्थर खदानों पर मजदूरी करने वाले मजदूरों के दो गांवों की राजस्थान पत्रिका के रिपोर्टर ने हालत जानी तो सिलिकोसिस के कहर की दर्दनाक तस्वीर सामने आई।

करौली तहसील के कोसरा गांव में 120 दलित परिवार रहते हैं। इनमें से 40 से अधिक महिलाएं विधवा हो चुकी हैं। इन सभी के पतियों की मौत असुरक्षित खनन करने के बाद सिलिकोसिस बीमारी की चपेट में आने से हुई है। इसके अलावा 30 मजदूर भी इसी रोग से पीड़ित होने से घुट-घुट कर जी रहे हैं। सिलिकोसिस को लेकर बनी नई नीति के अनुसार इनको बीमारी से बचाव और राहत के लिए सरकार से कोई मदद नहीं मिल रही। किसी एक पीड़ित की नहीं बल्कि पूरे गांव में कमोबेश ऐसी स्थिति है। कोसरा गांव के निवासी नेकराम जाटव ने बताया कि 40 लोगों की सिलिकोसिस से मौत के बाद उनके परिवारों की हालत दयनीय है। इनके बच्चों के लिए न शिक्षा, स्वास्थ्य के प्रबंध हैं और न पहनने को कपड़े खाने को पौष्टिक आहार है। ऐसे में ये बच्चे भी विभिन्न बीमारी की चपेट में आरहे। विधवाएं मेहनत-मजदूरी से घर को चलाती हैं लेकिन उंनको भी अनेक बीमारी घेरे हुए हैं।

इसी प्रकार सांकरा गांव की सौ घर की आबादी में से 25 महिलाओं का सुहाग उजड चुका हैं। इनकी मौत का कारण सिलिकोसिस की बीमारी रही। अभी भी इस गांव के 16 ग्रामीण इससे रोग से पीड़ित हैं।

करौली। कोसरे गांव में एक स्थान पर बैठी विधवाएं जिनका सुहाग सिलिकोसिस के कारण छिन गया।

इसलिए बढ़ रहा सिलिकोसिस

पत्थर खदानों पर मजदूरी करते हुए इसलिए मजदूर सिलीकोसिस की चपेट में आते हैं कि उनके लिए सुरक्षित खनन के प्रबंध नहीं हैं। सुरक्षित खनन व सिलिकोसिस से बचाव के लिए मजदूरों को मॉस्क या ऐसी डिवाइस की जरूरत होती है जो दस माइक्रोन साइज के कणों को श्वसन तंत्र में जाने से रोक सके। इसके अलावा पत्थरों के शोर से बचाव के लिए कान के यंत्र, हेलमेट, उच्च क्वालिटी के जूते पत्थरों से उड़ती धूल पर पानी का छिड़काव भी नियमित होना चाहिए। ताकि धूल नहीं उड़ सके। लेकिन करौली में हो रही खानों पर इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है। इसी कारण से मजदूर सिलिकोसिस की चपेट में आते जा रहे हैं।

अब बेटों की जान को खतरा

इलाके में रोजगार का अभाव है। ग्रामीण इलाके में पेट भरने के लिए पत्थर खदानों पर मजदूरी करना ही एक मात्र विकल्प लोगों को दिखता है। ऐसे में पिता की मौत के बाद उनके बेटे भी पत्थर तोड़ने के काम पर निकल पड़ते हैं। इस कारण एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी भी इस रोग की चपेट में आ रही है। सिलीकोसिस से पति की मौत के बाद अनेक विधवाओं ने अपने बेटों को खनन मजदूरी से दूर रखने की सोची, लेकिन अन्य कोई रोजागर नहीं होने से इस ओर भेजने को मजबूर किया। गांव की बुद्धो व नीरो जाटव सहित अन्य के बेटे संदिग्ध रूप से सिलीकोसिस की चपेट में है, उन्होंने उपचार कराना शुरू कर दिया। ऐसे दर्जनों मामले हैं।

योजना का लाभ ना सहायता मिली

सिलिकोसिस के लिए घोषित नई नीति में पीड़ित को खाद्य सुरक्षा व पालनहार योजना का लाभ दिया जाना है। कोसरा में विधवा सुरजो, नीरो, हल्की ने बताया कि उनके पतियों की मौत सिलिकोसिस से हुई, फिर भी खाद्य सुरक्षा सूची में उनको शामिल नहीं किया हुआ है। निर्धनता में दो समय की रोटी का जुगाड़ मुश्किल से हो पाता है। इसी प्रकार पांच लाख रुपए की आर्थिक मदद सरकार से उपलब्ध कराने का प्रावधान है, जिसमें उपचार व भरण पोषण के लिए तीन लाख रुपए का मुआवजा, 1500 रुपए की पेंशन तथा मौत के बाद आश्रितों को दो लाख रुपए का मुआवजा देने का प्रावधान है। पीड़ित परिवार इस मदद का अभी इंतजार ही कर रहे।

हमारी प्राथमिकता में शामिल है

सिलिकोसिस जैसी बीमारी को जड़ से समाप्त करना हमारी प्राथमिकता में शामिल है। नई सिलिकोसिस नीति बनी है, इस कारण मुआवजा, पेंशन व खाद्य सुरक्षा योजना में नाम जोड़ने की प्रक्रिया चल रही है। सम्भवतय: एक महीने के अंदर प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। सभी को निष्पक्षता से सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाया जाएगा।

डॉ. मोहनलाल यादव जिला कलक्टर करौली

दैनिक भास्कर पत्रिका 12/2/2020

...गंदे पानी म... बना रखी है, तो क... जगह लाग दूषित

सिलिकोसिस के कहर से मुश्किल भरे हालात

जवानी में विधवा का दंश झेलने को मजबूर

पत्रिका फॉलो अप

खनन मजदूरों की पत्नी 40-45 साल की उम्र में हो जाती विधवा, एक संस्था की सर्वे रिपोर्ट में खुलासा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

करौली. जिले के डांग क्षेत्र में सिलिकोसिस जैसी गम्भीर बीमारी के कारण जवानी की उम्र में ही महिलाओं का सिंदूर उजड़ रहा है। औसत रूप से 40 से 45 साल की उम्र में महिलाएं विधवा हो रही हैं। एक संस्था की सर्वे रिपोर्ट इसका खुलासा करती है।

सिलिकोसिस प्रभावित डांग क्षेत्र के चुनिंदा गांवों में राजस्थान पत्रिका रिपोर्टर ने हालात जाने तो सिलिकोसिस पीड़ित परिवारों में 40 से 45 साल की उम्र की महिलाएं विधवा मिली। करौली के निकट कोसरा गांव में 120 दलित परिवारों में 40 विधवाएं हैं, जिनकी औसत उम्र 40 से 45 साल है। महिलाएं बताती हैं कि उनके पति खदान पर जाकर पत्थर निकालते थे।

इसी दौरान सिलिकोसिस की चपेट में आने से मौत हुई, तब से परिवार की जिम्मेदारी वे ही संभालती हैं। अधिकांश घरों की पति की मौत के बाद आर्थिक हालत खराब हैं। क्योंकि गांव में खान पर मजदूरी के अलावा अन्य कोई रोजगार नहीं है। आर्थिक हालत खराब होने से वे अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिला पाती हैं। चिकित्सा के लिए भी भटकना पड़ता है। आय का जरिया नहीं होने से महिलाओं पर कर्ज का बोझ भी है।

संस्था ने सरकार को भेजी सर्वे रिपोर्ट

सिलिकोसिस से पीड़ित मजदूरों के बीच काम करने वाली डांग विकास संस्था ने सिलिकोसिस प्रभावित परिवारों की महिलाओं के हालातों पर एक रिपोर्ट तैयार कर सरकार को भेजी है।

इसमें अधिकांश विधवाओं की औसत उम्र 40 से 45 वर्ष ही बताई गई है। यानी जवानी वे विधवा हो जाती हैं।

करौली जिले के 30 गांवों पर यह रिपोर्ट तैयार की गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार 30 गांवों में 5 हजार 198 घरों में से 3 हजार 239 घरों के लोग पत्थर खदानों पर मजदूरी के कार्य से जुड़े पाए गए। इन परिवारों में 1 हजार 20 महिलाओं का सुहाग उजड़ चुका है। इनमें 22 प्रतिशत महिलाएं 45 से कम उम्र तथा 58 प्रतिशत महिलाएं 45 और 55 वर्ष के बीच आयु की है। इन सभी की मौत सिलिकोसिस से हुई है।

(कार्यालय संवाददाता)

सिलिकोसिस से मौत

करौली. लांगरा थाना क्षेत्र के सांथलपुर में सिलीकोसिस पीड़ित मजदूर की मौत हो गई। थानाधिकारी दिनेश चंद मीना ने बताया कि रामरुप पुत्र विशनलाल मीना निवासी सांथलपुर सिलिकोसिस से पीड़ित था, जिसने सोमवार को दम तोड़ दिया।

डांग के गांवों में हालात खराब

डांग क्षेत्र के गांवों में 40 से 45 साल क उम्र में सिलिकोसिस पीड़ित मजदूर की मौत हो रही है। इससे विधवा महिलाओं को घर चलाने में परेशानी आती है। हालात खराब है। असल में खदानों पर खनन करने के सुरक्षित स्वास्थ्य के प्रबंध नहीं है। सिलिकोसिस पीड़ितों को समय पर उपचार औप सहायता नहीं मिलती। सरकार को ध्यान देकर इस पर अंकुश लगाने के काम करने होंगे।

विकास भारद्वाज, डांग विकास संस्थान सचिव, करौली

जल्दी आएं तो उपचार संभव है

सिलिकोसिस पीड़ित मजदूर जल्द अस्पताल में आकर जांच कराने के बाद मापदण्डों के आधार पर उपचार ले तो इलाज संभव है। 40 से 45 साल की उम्र में मजदूरों की मौत होने के बात भी सामने आ रही है। लेकिन इस प्रकार की स्थिति गैंगसा में काम करने वाले मजदूरों की अधिक है।

डॉ. विजय सिंह मीना जिला क्षय रोग अधिकारी करौली।

कार्यशाला • प्रशिक्षण में नादौती- टोडाभीम- सपोटरा- हिंडौन व करौली के स्वयंसेवकों ने लिया भाग

आंगनबाड़ी केंद्रों पर मिलने वाली छह प्रकार की सेवाओं के बारे में जानकारी दी

कार्यालय संवाददाता | करौली

डांग विकास संस्थान करौली एवं टाटा ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में सोमवार को करौली में विलेज कॉन्ट्रेक्ट ड्राइव के अंतर्गत 40 आंगनबाड़ी केंद्रों के संदर्भ व्यक्तियों की एक दिवसीय कार्यशाला यहां वैशाली नगर कार्यालय में हुई। जहां आंगनबाडी केंद्रों पर शाला पूर्व शिक्षा पर जोर देते हुए बच्चों को कुपोषण मुक्त करने में सहभागिता निभाने का संकल्प दोहराया। इस प्रशिक्षण में नादौती, टोडाभीम, सपोटरा, हिंडौन व करौली के 40 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार शर्मा ने सभी संदर्भ व्यक्तियों को आंगनवाड़ी केंद्र पर 0 से 3 बर्ष के बच्चे की वजन, लंबाई, टीकाकरण व गर्भवती का टीकाकरण, वजन, लंबाई व स्वास्थ्य जांच, पोषाहार आदि की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आंगनबाड़ी केंद्रों पर पंजीकृत सभी बच्चों का ग्रोथ चार्ट में घर-घर जाकर अपडेट करें। ताकि, बच्चे के पोषण स्तर के बारे में पता चल सके। इससे यह भी पता चलेगा कि बच्चा कुपोषित है या अति कुपोषित है या फिर सामान्य है। कुपोषित व अतिकुपोषित बच्चों को रेफर कर उनका उपचार कर सामान्य श्रेणी में लाने का लक्ष्य तय करना है। तजिससे कि कोई भी बच्चा कुपोषित नहीं रहे। यह अभियान टाटा ट्रस्ट व डांग विकास संस्थान द्वारा चयनित 40 आंगनवाड़ी केंद्रों पर सघन रूप से चलाया जा रहा है। साथ ही संदर्भ व्यक्तियों को उपलब्ध 6 सेवाओं के बारे में विस्तार बताया कि लाभार्थी वर्ग इन सेवाओं का लाभ आंगनबाड़ी केंद्र पर लें। जिससे सही पोषण, देश रोशन तथा कोई भी बच्चा कुपोषित ना रहे। इसी उद्देश्य से यह अभियान चलाया जा रहा है। टाटा ट्रस्ट की अशरफ ने सभी संदर्भ व्यक्तियों को आंगनबाड़ी केंद्रों के अंतर्गत आने वाले सभी बच्चों को व गर्भवती महिलाओं तथा 2 साल तक के बच्चे को 1000 दिवस में ध्यान रखने के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस कार्यक्रम में डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश शर्मा, विक्रम सिंह जाटव, देशराज गोस्वामी, जितेंद्र करसोलिया, विक्रम सिंह गुर्जर, भूरासिंह गुर्जर, राजकुमार गुप्ता व टाटा ट्रस्ट के जिला कार्यक्रम अधिकारी अशरफ ने भी आंगनबाड़ी पर उपलब्ध सेवाओं की संदर्भ व्यक्तियों को जानकारी दी।

करौली। आंगनबाडी केंद्रों पर मिलने वाली छह प्रकार की सेवाओं की जानकारी देते डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समवयक राजेश शर्मा।

दैनिक भास्कर - 21/1/20

स्वास्थ्य सुरक्षा की दी जानकारी

करौली.@ पत्रिका. डांग विकास संस्थान करौली व टाटा ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को करौली में विलेज कॉन्ट्रेक्ट ड्राइव के अंतर्गत 40 आंगनबाड़ी केन्द्रों के संदर्भ व्यक्तियों की कार्यशाला यहां संस्थान के कार्यालय पर हुई। इस दौरान डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेशकुमार ने संदर्भ व्यक्तियों को आंगनबाड़ी केन्द्र पर तीन वर्ष तक के बच्चों का वजन, लंबाई, टीकाकरण व गर्भवती महिलाओं के टीकाकरण व स्वास्थ्य जांच पोषाहार की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों पर पंजीकृत सभी बच्चों का ग्रोथ चार्ट में घर-घर जाकर नवीनीकरण किया जाए, ताकि बच्चे के पोषण स्तर तथा कुपोषित की स्थिति का पता चल सके। उन्होंने जानकारी दी कि संस्थान एवं टाटा ट्रस्ट की ओर से कुपोषण से मुक्ति के लिए चयनित 40 आंगनबाड़ी केन्द्रों पर अभियान चलाया जा रहा है। टाटा ट्रस्ट के जिला कार्यक्रम अधिकारी अशरफ ने सभी संदर्भ व्यक्तियों को आंगनबाड़ी केन्द्रों के अंतर्गत आने वाले सभी बच्चों, गर्भवती महिलाओं व 2 साल तक के बच्चे की देखभाल की विस्तार से जानकारी दी। कार्यालय में विभिन्न जगह के 40 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। डांग विकास संस्थान के विक्रम सिंह, देशराज गोस्वामी, जितेंद्र करसोलिया आदि मौजूद थे।

राजस्थान पत्रिका - 21/1/20

दैनिक भास्कर 22/11/2020

डांग विकास संस्थान ने कोरोना कर्मवीरों का किया अभिनंदन

करौली। डांग विकास संस्थान दफ्तर में कोरोना योद्धाओं को किया सम्मानित।

करौली। कोविड-19 महामारी के दौर में निस्वार्थ सेवाभाव से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने और जनसेवा से जुड़ी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाने वाले कोरोना कर्मवीरों का शनिवार को यहां डांग विकास संस्थान के दफ्तर में कोरोना योद्धा सम्मान से नवाजा गया। विभिन्न क्षेत्र व सेवा कार्यों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली शख्सियतों को डांग विकास संस्थान के सचिव डॉ.विकास भारद्वाज व जिला कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने संयुक्त रूप से माला पहनाकर प्रशस्ति-पत्र व स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया।

उन्होंने बताया कि सम्मानित होने वाले कोरोना कर्मवीरों में बाबूलाल मीना, अधिशासी अभियन्ता (डीडीयूजीजेवाई), योगेश कुमार शर्मा, थानाधिकारी एपीटीपीएस करौली, भगवानदास मीना, अधिशाषी अभियन्ता (सतर्कता), सुरेन्द्र कुमार शर्मा, कनिष्ठ अभियन्ता (सतर्कता), शिवानी जैन कनिष्ठ अभियन्ता (एचटीएम), उमेश कुमार जाटव, पुनीत परवाल, रामवीर गुर्जर, पूनम जैन, चरणसिंह, उदयचंद लोधा, बिजली विभाग करौली स्टाफ और डॉ. देवकीनंदन पाराशर, चंद्रशेखर चतुर्वेदी मेल नर्स, अनिल कुमार शर्मा मेल नर्स प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सायपुर को कोरोना वैश्विक महामारी में प्राणी कल्याण की दिशा में किए गए सहयोग के लिए कोरोना योद्धा सम्मान पत्र से विभूषित किया गया है। संस्थान के परियोजना अधिकारी विक्रम सिंह गुर्जर, राजकुमार गुप्ता, बृजभूषण शर्मा, विक्रम सिंह जाटव, महेश जाटव, कपिल गुप्ता आदि भी उपस्थित रहे।

जागरूकता • कोरोना से बचाव के लिए ग्रामीणों से सोशल डिस्टेंस की पालन का आग्रह

लोगों को खाद्य सामग्री के किट बांटे

कार्यालय संवाददाता | करौली

जिले में दीवाली बाद एक बार फिर से कोविड-19 वायरस के बढ़ते संक्रमण व रोगियों की संख्या के मद्देनजर जिला प्रशासन व चिकित्सा विभाग सजग व सतर्कता बरत रहा है। वहीं सामाजिक सरोकार के रूप जनसेवा की भागीदारी निभाते हुए डांग विकास संस्थान, करौली के प्रतिनिधि भी शहर के अलावा गांवों में भी कोरोना से बचाव के लिए जन जागरूकता पर बल दे रहे हैं। गांवों में गरीब, मजदूर व जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री की किट उपलब्ध कराने के साथ ही कोरोना से बचाव के लिए मास्क पहनने की अनिवार्यता, सोशल डिस्टेंस का पालन और सरकार की जारी एडवाईजरी की शत-प्रतिशत पालना के लिए भी प्रेरित कर रहे हैं। गांव कोसरा, सोरया, भांकरी,

करौली। जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री किटों का वितरण करते डांग विकास संस्थान के पदाधिकारी।

मांची व मर्चेट के 30 पात्र परिवारों को खाद्य सामग्री की किट देकर लाभान्वित भी किया।

डांग विकास संस्थान करौली के जिला कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार शर्मा ने बताया कि कोरोना वैश्विक महामारी में संस्थान द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। शिविरों में लोगों की थर्मल स्क्रीनिंग के साथ ही कोरोना से बचाव की जानकारी के पंपलेट्स भी वितरित किए जा रहे हैं। साथ ही प्रवासी मजदूरों को राशन सामग्री का वितरण भी किया जा रहा है। सचिव डॉ.विकास भारद्वाज ने बताया कि रविवार को संस्था के प्रतिनिधियों ने गांव कोसरा, सोरया, मांची, मचेट, सांकरा व भांकरी गांव में लोगों को जानकारी दी गई। ग्रामीणों को बताया कि कोरोना से डरने की आवश्यकता नहीं है, इसके लिए आवश्यक सावधानियां जैसे समय-समय पर साबुन से हाथ धोना, मास्क का प्रयोग करना, सार्वजनिक स्थानों पर नहीं थूकना, सांस लेने में तकलीफ होने पर तुरंत चिकित्सक से परामर्श लेने जैसे बिंदुओं पर फोकस करते हुए समझाइश की गई।

गर्भवती महिला को सावधानियों की दी जानकारी

न्यूज सर्विस/नवज्योति, करौली। डांग विकास संस्थान करौली के कार्यक्रम समन्वयक राजेश शर्मा ने बताया कि डांग विकास संस्थान द्वारा स्ट्रैन्थनिंग आफ रूटीन इम्यनाईजेशन कंपेन के तहत अरावली व यूनीसेफ के तत्वावधान में मातृ शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस पर टीकाकरण के साथ-साथ गर्भवती महिला व बच्चों को रखने वाली सावधानियों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। समन्वयक राजेश शर्मा ने बताया कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सायपुर व उप स्वास्थ्य केन्द्र, राजपुर के गांव तुलसीपुरा, चौरंडापुरा व उप स्वास्थ्य केन्द्र बीजलपुर में मातृ शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस मनाया गया जिसमें गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण, आयरन की गोली तथा जांचे की गई तथा आवश्यक सावधानियां रखने व पोषण के बारे में बताया गया तथा बच्चों का टीकाकरण में सहयोग किया गया। शर्मा ने बताया कि संस्था के द्वारा पिछले माह की ड्यू लिस्ट के आधार पर टीककरण पूर्ण नहीं होता था।

दैनिक नवज्योति
20/11/2020

गर्भवती महिलाओं व बच्चों को टीकाकरण के अलावा अन्य आवश्यक सावधानियों के बारे में जानकारी दी

मातृ-शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस मनाया

कार्यालय संवाददाता | करौली

डांग विकास संस्थान, करौली के तत्वावधान में स्ट्रेंथनिंग ऑफ रूटीन इम्यूनाइजेशन कैंपेन के तहत अरावली व यूनिसेफ के सहयोग से गुरुवार को गांव सायपुर, तुलसीपुरा, चौरंडापुरा व बीजलपुर में मातृ-शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस के तहत जन जागरुकता के कार्यक्रम हुए।

इसमें मातृ-शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस पर टीकाकरण के साथ-साथ गर्भवती महिला व बच्चों को रखने वाली अन्य आवश्यक सावधानियों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई। संस्था के कार्यक्रम समन्वयक राजेश शर्मा ने मुख्यमंत्री राजश्री योजना, जननी सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री मातृ वन्दना, सुकन्या व शुभ लक्ष्मी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

संस्था के कार्यक्रम समन्वयक राजेश शर्मा ने बताया कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सायपुर व उप स्वास्थ्य केन्द्र, राजपुर के गांव तुलसीपुरा, चौरंडापुरा व उप स्वास्थ्य केन्द्र बीजलपुर में मातृ शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस मनाया गया। जिसमें गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण, आयरन की गोली तथा जांचें की गईं तथा आवश्यक सावधानियां रखने व पोषण के बारे में बताया गया। साथ ही बच्चों का टीकाकरण में सहयोग किया गया।

संस्था द्वारा पिछले माह की ड्यू लिस्ट के आधार पर टीकाकरण पूर्ण नहीं होता था, संस्था द्वारा होम विजिट व सामुदायिक बैठक कर बच्चों व गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण पूर्ण करवाया गया।

मातृ शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस के अवसर पर डॉ. देवकी नन्दन, एल.एच.वी. सुमित्रा चतुर्वेदी, एएनएम भारती चतुर्वेदी, डांग विकास संस्थान के राजेश शर्मा व परियोजना अधिकारी विक्रम सिंह गुर्जर इस कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

राशिफल

दैनिक भास्कर 20/11/2020

चलो चलें आंगनबाड़ी अभियान चलाया

करौली में चलो चले आंगनबाड़ी अभियान में भाग लेती आंगनबाड़ी कार्यकर्ता।

न्यूज सर्विस/नवज्योति, करौली

डांग विकास संस्थान करौली द्वारा टाटा ट्रस्ट के सहयोग से 40 मॉडल आंगनबाडी केन्द्रो पर 'लो चले आगनबाड़ी अभियान चलाया जा रहा है।

उक्त जानकारी देते हुए डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश शर्मा ने बताया कि करौली जिले में टाटा ट्रस्ट द्वारा संचालित 40 मॉडल आंगनबाडी केन्द्रों पर चलो चले आगनबाडी अभियान चलाया जा रहा है जिसका उद्देश्य भारत सरकार द्वारा देश में कुपोषण को दूर करने व सामुदायिक जागरूकता एवं जन-जन भागीदारी के लिए जन आंदोलन का रूप दिया जाना है। राजेश शर्मा ने बताया कि उक्त अभियान के अंतर्गत "जन-मानस, सरकारी कार्यकर्ता एवं संस्थायें एकजुट हो कर कुपोषण मुक्त, स्वस्थ्य और मजबूत भारत का निर्माण करना, पोषित हो हर लाल देश बने खुशहाल, गर्भवती की देखभाल ऑगनबाडी रखे ख्याल, स्वस्थ्य बच्चा तो भविष्य अच्छा, मुस्कुराएगा हर बच्चा शिक्षा संग स्वास्थ्य सुरक्षा, पोषित हो हर लाल बने भविष्य खुशहाल, शिक्षा भोजन और पोषण स्वस्थ भविष्य स्वस्थ बचपन, ऑगनबाडी ए.एन.एम. आशा बचपन की परिभाषा" का संदेश दिया जा रहा है।

दैनिक नवज्योति
5/12/19

राजस्थान पत्रिका – 15/11/19

ताकि कुपोषण का स्तर हो सके कम

चलो चलें आंगनबाड़ी अभियान शुरू

करौली.@ पत्रिका. आंगनबाड़ी केन्द्रों पर आओ सुनिश्चित करें के तहत चलो चलें आंगनबाड़ी अभियान गुरुवार से शुरू हुआ है। इसका उद्देश्य आंगनबाड़ी केन्द्रों पर कुपोषण का स्तर कम कर पोषण को बढ़ावा देना है। यह अभियान टाटा ट्रस्ट एवं स्थानीय डांग विकास संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में शुरू हुआ है।

यहां गुरूवार को आयोजित पत्रकारवार्ता में टाटा ट्रस्ट के स्टेट कॉर्डिनेटर रविन्द्र ने जानकारी दी कि टाटा ट्रस्ट की ओर से जिले में 40 आंगनबाड़ी केन्द्रों का नवीनीकरण कर विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। इन केन्द्रों को राष्ट्रीय पोषण मिशन के तहत कुपोषणविहीन बनाने का लक्ष्य तय कर डांग विकास संस्थान के साथ जिले में अभियान शुरू किया है। इसके अलावा लोगों को केन्द्रों से जोड़ने की भी मंशा है, ताकि केन्द्र बेहतर बन सकें और यहां बच्चों, धात्री व गर्भवती महिलाओं को लाभ मिल सके।

डांग विकास संस्थान के सचिव डॉ. विकास भारद्वाज ने बताया कि 40 आंगनबाड़ी केन्द्रों पर पोषण अभियान के अलावा बच्चों का नामांकन बढ़ाना और ठहराव सुनिश्चित करना भी उद्देश्य है।

करौली में पत्रकारवार्ता में उपस्थित आईसीडीएस विभाग की उपनिदेशक सहित अन्य।

बच्चों को कराया अन्नप्रासन्न

टाटा ट्रस्ट व डांग विकास संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में गावड़ा मीणा गांव में आंगनबाड़ी केन्द्र पर चलो चले आंगनबाड़ी अभियान की शुरूआत हुई। डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार ने बताया कि केन्द्र पर 7 माह के 2 बच्चों का अन्नप्रासन्न कराया गया। वहीं गर्भवती महिलाओं की गोद भराई की रस्म हुई। टाटा ट्रस्ट के श्रीकांत सेनापति व रविन्द्र ने बताया कि 3 से 6 वर्ष तक के बच्चों को आंगनबाड़ी पर शाला पूर्व शिक्षा का लाभ मिलेगा और शरीरिक व मानसिक विकास होगा।

महिला एवं बाल विकास विभाग की उपनिदेशक शाति वर्मा ने कहा कि यह अभियान बच्चों और धात्री व गर्भवती महिलाओं को संबल प्रदान करेगा। बच्चों को शारीरिक विकास हो सकेगा। इस मौके पर डांग विकास संस्थान के राजेश कुमार, विक्रम सिंह, करौली सीडीपीओ राजेश्वरी मित्तल, हिण्डौन सीडीपीओ जितेन्द्र, सतीश शर्मा, टाटा ट्रस्ट के श्रीकांत सेनापति आदि मौजूद थे।

सर्वे के निर्देशः जयपुर/अजमेर. राज्य सरकार ने मुस्लिम समाज की पिछड़ी जातियों को विशेष पिछड़ा वर्ग में शामिल करने के लिए सर्वे के निर्देश दिए हैं। अतिरिक्त संभागीय आयुक्त और राजस्थान राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य सचिव के पत्रों के बाद अजमेर जिला कलक्टर ने 1 नवंबर को तहसीलदारों को पत्र जारी किया है। इसमें मुस्लिम मिरासी समाज को विशेष पिछड़ा वर्ग में जातियों में जोड़ने का सर्वे के निर्देश दिए हैं।

दैनिक भास्कर 12/8/19

करौली-हिंडौन

टोडाभीम | सूरौठ • श्रीमहावीरजी कस्बा शहर • ना

गंगापुर सिटी, सोमवार 12 अगस्त, 2019

मंडे पॉजिटिव ■ न्यूकोनियोसिस पॉलिसी के फाइनल ड्राफ्ट को मुख्यमंत्री ने भी दी हरी झंडी

सिलिकोसिस पीड़ितों को मिलेगी 5 लाख की आर्थिक सहायता व 4 हजार रु प्रतिमाह पेंशन

15 अगस्त के बाद सीएम करेंगे पॉलिसी की लांचिंग, जिले के 5 हजार सर्टिफाई रोगियों को मिलेगा लाभ

सुखदेव डागुर | करौली

राज्य सरकार 15 अगस्त के बाद न्यूकोनियोसिस पॉलिसी राजस्थान-2019 लागू करने जा रही है। बीओसीडब्ल्यू सहित खनन श्रमिकों के कल्याण के लिए सिलिकोसिस नीति लागू करने वाला राजस्थान देश का पहला राज्य होगा। इस नीति में सिलिकोसिस ग्रस्त रोगियों को 5 लाख की सहायता राशि के अलावा 4 हजार रुपए प्रतिमाह की पेंशन सहित अन्य परिलाभों का प्रावधान किया है। यह सहायता मौजूदा परिलाभों से कई गुणा ज्यादा होगी। इस पॉलिसी से करौली के पांच हजार सहित प्रदेश के 21 हजार से ज्यादा सर्टिफाई सिलिकोसिस रोगी लाभांवित होंगे।

इस पॉलिसी के फाइनल ड्राफ्ट को मुख्य सचिव के बाद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी हरी झंडी दे दी है। 15 अगस्त के बाद एक समारोह में इस पॉलिसी की लांचिंग का समय निर्धारित किया गया है। दरअसल, राजस्थान खनिजों से भरपूर राज्य है। अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों के कारण श्रमिक सिलिकोसिस जैसी असाध्य बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। श्रमिकों के स्वास्थ्य व कल्याण हित में राज्य सरकार ने यह नई नीति बनाई है। इसमें सिलिकोसिस रोकथाम, पुनर्वास, नियंत्रण के उपाय आदि पर फोकस किया है। राज्य में सिलिकोसिस पोर्टल के अनुसार न्यूकोनियोसिस बोर्ड से 21 हजार प्रमाणित रोगी हैं। इसमें करौली जिले में औसतन 4208 जीवित एवं 576 मृतक रोगियों का आंकड़ा है। हरियाणा व मध्यप्रदेश भी पूर्व में सिलिकोसिस पॉलिसी जारी कर चुके हैं, मगर वह सिर्फ भवन संनिर्माण श्रमिकों के लिए है, जबकि राजस्थान की पॉलिसी बीओसीडब्ल्यू सहित खनन श्रमिकों के लिए भी है, जो देशभर में सबसे अलग व पहली है।

रोगियों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन जरूरी

इस पॉलिसी का ध्येय सिलिकोसिस नियंत्रण, पूर्ण रोकथाम, व्यवसायिक स्वास्थ्य, सहायता व पुनर्वास करना है। धूल जन्य बीमारियों के खतरों को कम करना तथा न्यूकोनियोसिस से होने वाली मौतों पर रोकथाम लगाना है। डस्ट वाले रोगों में न्यूमोकॉनियोसिस, कॉल वर्कर्स, न्युमोनिया, एस्बेस्टोसिस, बेरिटोसिस, सिड्रोसिस, स्टेनोसिस आदि हैं। इस न्यूकोनियोसिस नीति में योग्यता के लिए राज्य का कोई भी मजदूर या व्यक्ति प्रमाणित न्यूकोनियोसिस हो। दूसरे राज्यों या अन्य एजेंसी से प्रमाणित रोगी को रिलीफ नहीं मिलेगा। राजस्थान सिलिकोसिस पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन होगा। नोटिफिकेशन की तारीख से यह राज्य के सभी जिलों में लागू होगी।

नई नीति से कई गुणा ज्यादा मिलेंगे परिलाभ

मद	पहले	अब
सिलिकोसिस रोगी	2 लाख	4 लाख
मृतक के आश्रित को	3 लाख	1 लाख
रोगी को पेंशन	-	4 हजार प्रतिमाह
दाह संस्कार के लिए	-	10 हजार रुपये
मृतक की पत्नी को पेंशन	-	3500 रुपए प्रतिमाह
बच्चों का स्किल डवलपमेंट	-	आरएसएलडीसी से
हिताधिकारी रोगी बच्चों को	-	स्कॉलरशिप 25 हजार
खाद्य सुरक्षा योजना लाभ	हां/ना	स्वतः ही नाम जुड़ेगा

कॉपर्स फंड बनेगा, हर तीन माह में रिव्यू

राज्य सरकार इसके लिए कॉपर्स फंड बनाएगी। जिसमें जिला स्तर पर डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन ट्रस्ट (डीएमएफटी) या अन्य एजेंसी के जरिये सिलिकोसिस रोगी को यह सहायता मिलेगी। इस पॉलिसी के क्रियान्वयन में राज्य के श्रम, स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, सूचना प्रोद्यौगिकी, माइन्स आदि विभागों की भूमिका रहेगी। प्रमाणित रोगियों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन होना जरूरी है। डांग विकास संस्थान के कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार के अनुसार पहले जिन सिलिकोसिस रोगियों को 1 लाख की राशि मिल गई है, उनको अब 3 लाख और मिलेंगे। वहीं जो मृतक हैं, उसके आश्रित पत्नी को 3500 रुपए प्रतिमाह फैमिली पेंशन मिलेगी। पीडितों की सुनवाई व समस्या समाधान व शिकायत के लिए जिला स्तर पर लीगल सेल बनेगी। बजट, जांच व बोर्ड आदि को लेकर मुख्य सचिव हर तीन माह में रिव्यू करेंगे।

ड्राफ्ट तैयार करने में छह स्वयंसेवी संस्थाओं की रही प्रमुख भूमिका

पॉलिसी का ड्राफ्ट तैयार करने में खनिकों व श्रमिकों के हित में कार्यशील प्रदेश की प्रमुख छह स्वयंसेवी संस्थाओं की प्रमुख भूमिका रही। पूर्वी राजस्थान से डांग विकास संस्थान करौली के अलावा मजदूर किसान शक्ति संगठन भीम, आजीविका ब्यूरो उदयपुर, एमएलपीसी जोधपुर, कोटड़ा आदिवासी संस्थान उदयपुर, ग्रामीण एवं सामाजिक विकास संस्थान अजमेर से संबद्ध मजदूर यूनियन का समन्वित प्रयास रहा। श्रम विभाग के व्यवसायिक स्वास्थ्य सलाहकार एनआईएमएच के पूर्व निदेशक डॉ.पी.के.सिसोदिया, सोशल एक्टिविस्ट के तौर पर राज्य मानवाधिकार आयोग के पूर्व सदस्य डॉ.एम.के.देवराजन एवं डांग विकास संस्थान के सचिव डॉ.विकास भारद्वाज ने भी सहभागिता निभाई है।

बजट भाषण में भी किया था नीति का उल्लेख

10 जुलाई को बजट भाषण में मुख्यमंत्री ने बिंदु संख्या 112 पर नई सिलिकोसिस नीति बनाने का उल्लेख किया है। जिसमें श्रमिकों के स्वास्थ्य हितों एवं सुरक्षा को दृष्टिगत रखकर खान मालिकों को उचित प्रबंधन के लिए पाबंद करने की प्रतिबद्धता भी है। इसके लिए जरूरत पड़ने पर सरकार नया कानून भी ला सकती है। मुख्य सचिव डी.बी.गुप्ता की अध्यक्षता में टास्क फोर्स की बैठक में 17 जून को सीएमओ में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ड्राफ्ट का फीडबैक लिया था।

प्रदेश में सिलिकोसिस की पहली वैज्ञानिक रिपोर्ट 2011 में करौली जिले से, सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर ह्यूमन राइट्स कमीशन ने जारी की गाइड लाइन

डांग विकास संस्थान के सचिव डॉ.विकास भारद्वाज ने बताया कि प्रदेशभर में सबसे पहले करौली जिले से वर्ष 2011 में सिलिकोसिस की पहली वैज्ञानिक रिपोर्ट एनआईएमएच नागपुर के जरिये सामने आई। वर्ष 2014 तक करौली, धौलपुर, दौसा व भरतपुर में डांग विकास संस्था ने सिलिकोसिस को लेकर ग्रास रूट से प्रांत व राष्ट्रीय स्तर पर पैरवी की। राज्य मानवाधिकार आयोग के तत्कालीन सदस्य डॉ.एम.के.देवराजन एवं एनआईएमएच के निदेशक डॉ.पी.के.सिसोदिया ने अरावली क्षेत्र की अन्य संस्थाओं को इस मुद्दे पर काम करने के लिए प्रेरित किया। वर्ष 2016 में वर्किंग टास्क फोर्स का गठन हुआ। अंततः राष्ट्रीय एवं राज्य मानवाधिकार आयोग ने सिलिकोसिस पीडितों के पुनर्वास, रोकथाम, निदान के लिए 59 अनुशंषाएं कीं। सुप्रीम कोर्ट के अंतरिम फैसले में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को केंद्र व राज्य सरकारों को गाइड लाइन जारी करने के निर्देश दिए गए।

दैनिक भास्कर 1 जुलाई 2019 करौली-हिंडौ

मंडे पॉजिटिव • बीमारी से बचाव के लिए राजेश शर्मा ने टांकी में फिट किया स्पंजनुमा रबर का छल्ला

खान श्रमिकों को 50% धूल कणों से बचाने में कारगर स्पंज रबर टूल

कार्यालय संवाददाता | करौली

खानों में काम करते श्रमिकों को उड़ती धूल से बचाने एवं लाईलाज सिलिकोसिस जैसी गंभीर बीमारी की चपेट में आने से रोकने के लिए डांग विकास संस्थान करौली के कार्यक्रम समन्वयक राजेश शर्मा ने खास डिवाइस (स्पंज रबर टूल) तैयार किया है। जुगाड़ तकनीक पर आधारित महज 7 से 10 रुपए की लागत से निर्मित लोहे की टांकी में स्पंजनुमा रबर छल्ला (देसी टूल) खान श्रमिकों को 2 से 10 माइक्रोन साइज वाले स्टोन कणों से भी बचाएगा। दरअसल, इस साइज के कण मास्क के उपयोग करने से भी नहीं रुक पाते हैं। लिहाजा, 50 फीसदी स्टोन डस्ट से बचाने में कारगर इस टूल के इस्तेमाल करने से श्रमिक की स्वस्थ्य श्वसनक्रिया के साथ जीवनीय शक्ति भी बढ़ेगी।

खनन श्रमिकों के हित में कार्यशील डांग विकास संस्थान, करौली के सचिव डॉ. विकास भारद्वाज व कार्यक्रम समन्वयक राजेश शर्मा ने बताया कि पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर सफल परीक्षण के बाद अब करौली-धौलपुर व बिजौलिया (भीलवाड़ा) की खानों के श्रमिकों के लिए जून माह के अंत तक इस डिवाइस का सुनिश्चित वितरण हो जाएगा। करौली माइनिंग एसोसिएशन की भी सकारात्मक सहभागिता रहेगी। वहीं प्रदेश के सभी खान श्रमिकों को इस टूल की उपयोगिता के लिए राज्य सरकार स्तर पर शीघ्र ही प्रजेंटेशन के बाद लागू करने की विस्तारक रूप से कवायद शुरू होगी। हालांकि, खान श्रमिक यूनियन द्वारा बीते दिनों भीम (राजसमंद) एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के समक्ष इस टूल का डेमो किया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि प्रमुख रूप से खनन क्षेत्र वाले प्रदेश के 23 जिलों के संगठित व असंगठित पत्थर कारोबार से जुडे करीब 25-30 लाख कामगार श्रमिकों को इससे लाभ मिलेगा। वहीं सिलिकोसिस पर अंकुश के साथ ही सुरक्षित खनन की दिशा में यह टूल मील का पत्थर साबित होगा। करौली में अमावस्या पर श्रमिक यूनियन की ओर से गांवों में खान पाठशाला कर सुरक्षित खनन के लिए जागरुकता एवं सिलिकोसिस रोकथाम व उपायों पर चर्चा की जाती है। यहां सिलिकोसिस रोकथाम के उपायों के लिए आईआईटी मुंबई की रूटेक संस्था के प्रतिनिधि भी आए, मगर मैन्युअल वर्क के अनुरूप यहां खनन व्यवसायियों को सुरक्षित खनन के लिए ज्यादा निवेश करने में अक्षम माना।

डिवाइस की तकनीक में देसी जुगाड़

राजेश शर्मा ने बताया कि खानों में श्रमिक जो बडी टांकी से खराद (खांच) का काम करते हैं। उस टांकी में लोहे की एक खास क्लिप में गोलनुमा रबर छल्ले के साथ फोम (स्पंज) लगाया है। श्रमिक खनन कार्य करता है तो इस फोम को गीली कर लेता है,इससे खनन की उड़ने वाली धूल इस फोम पर चिपक जाती है, इससे श्वसन के दौरान इस खतरनाक धूल से बच जाता है। यह टूल विशेषकर मैन्युअल माइनिंग वर्क में उपयोगी है। यहां श्रमिक अधिकांशतः 4-4 इंची के छेद इस टांकी द्वारा ही करते हैं। हालांकि, गीली छेदन प्रणाली अपनाते हैं तो श्रमिक को पत्थर की चिकनाई से काम करने में दिक्कत होती है। जबकि इस टूल से काम करने में ज्यादा आसानी है। यह टूल देसी तकनीक से बना है,इसकी क्लिप खोलकर फोम बदली या सफाई कर पुनः लगाई जा सकती है। वहीं श्रमिक भी इस डिवाइस को खुद भी तैयार कर सकते हैं। रबर व फोम सहज व सुलभता से मिल जाती है। इस टूल की रिसर्च स्टडी, पेटेंट की जरूरत भी है।

टूल प्रयोग से 50% तक धूल से बचाव संभव

देसी टूल का इस्तेमाल करने से मजदूरों में सिलिका की 50 प्रतिशत तक धूल को रोकने में सहायक है। इससे मजदूरों में होने वाली सिलिकोसिस बीमारी के बचाव के साथ स्वास्थ्य लाभ व जीवनीय शक्ति में बढ़ोतरी होगी। डेमो के दौरान जब इस टूल की फोम को श्रमिक ने 8 घंटे काम करने के दौरान बीच में करीब 6 बार धोया तो साफ बाल्टी के पानी में काफी धूल नीचे जमा हो गई। साथ ही श्रमिकों में लाल बलगम भी रुक गई। दूसरा, यह टूल सस्ता,सुलभ व बेहद उपयोगी भी है।

धूल नियंत्रण के लिए तैयार किया टूल

डांग विकास संस्थान के सचिव डॉ. विकास भारद्वाज के मार्गदर्शन में खनिकों की पीड़ा को महसूस कर इस डिवाइस को तैयार करने वाले कार्यक्रम समन्वयक राजेश कुमार शर्मा ने बताया कि खदानों में पहुंचकर इस टूल की उपयोगिता के लिए प्रशिक्षण भी दिया जा चुका है। यंत्र की खासियत यह है कि,श्रमिकों की टांकी व हथौड़े में ही स्पंज व टायर के छल्ले का प्रयोग कर स्पंज के माध्यम से उडने वाली धूल के चिपके कणों को पानी में निचोड़कर सांस में जाने से रोका जा रहा है। इससे खनन कार्य के दौरान धूल के कण सांस में जाने से रुके हैं और बारीक कणों का आंखों में जाने का खतरा भी कम हुआ है। करौली, धौलपुर व बिजौलिया की खानों में काम करने वाले 150 खनिकों पर इस टूल का सफल परीक्षण किया जा चुका है। अब इस टूल का प्रांतीय स्तर पर व्यापक विस्तार होगा।

1 जुलाई 2017

करौली-हिंडौन भास्कर

किशोरियों को स्वच्छता-पोषण और मानसिक स्वास्थ्य की दी जानकारी

अब मेरी बारी अभियान की प्रशिक्षण कार्यशाला में 35 किशोरियों ने लिया भाग

कार्यालय संवाददाता | करौली

करौली| अब मेरी बारी अभियान अंतर्गत डांग विकास संस्थान में बेसिक आमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थित किशोरी।

राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम पर आधारित 'अब मेरी बारी' अभियान के तहत रविवार को यहां डांग विकास संस्थान, करौली में एक दिवसीय बेसिक आमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुई। जिसमें संभागी ग्रामीण क्षेत्र की 35 किशोरियों को विशेषज्ञ व प्रशिक्षकों ने अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। प्रमुख रूप से बालिका व किशोरियों को स्वच्छता, पोषण व मानसिक स्वास्थ्य विकास के बारे में बताया गया।

डांग विकास संस्थान के सचिव डॉ. विकास भारद्वाज ने बताया कि अब मेरी बारी है अभियान के अंतर्गत संस्था द्वारा 10 से 19 साल की ग्रामीण क्षेत्र की किशोरी बालिकाओं को राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम की बेसिक जानकारी दी गई। कार्यशाला में संस्था के कार्यक्रम अधिकारी राजेश कुमार ने कार्यक्रम के प्रयोजन पर प्रकाश डाला। वहीं संदर्भ व्यक्तियों के रूप में करौली शहर की आशा नम्रता नामा तथा आर.के.एस.के कार्यक्रम के काउंसलर गजानंद शर्मा ने राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के आरंभ एवं प्रमुख 6 उद्देश्यों के बारे में समझाया। साथ ही इस कार्यक्रम की आवश्यकता के बारे में भी बताया। संदर्भ व्यक्तियों ने स्वच्छता, पोषण, मानसिक स्वास्थ्य, किशोरों में व्यसन, मासिक चक्र की पूर्ण जानकारी, एनीमिया के लक्षण व बचाव की जानकारी, खान-पान, संतुलन आहार के बारे में परस्पर चर्चा के माध्यम से जानकारी दी। उन्होंने विद्यालयों में प्रत्येक सोमवार को तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों पर प्रत्येक गुरुवार को वितरण की जाने वाली आयरन की गोलियों के बारे भी बताया। गजानंद शर्मा ने जिले में संचालित किशोर-किशोरी मैत्री निशुल्क परामर्श केन्द्रों के कार्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में भी विस्तार पूर्वक जानकारी दी। इस कार्यशाला में गांव ससेडी, कोटे, छाबर, महू गांवों की 35 किशोरी बालिकाओं ने भाग लिया। कार्यशाला में अभियान की फील्ड कॉर्डिनेटर ज्योति जाटव, परियोजना अधिकारी विक्रम सिंह जाटव, डीवीएस के राजेश शर्मा, बृजभूषण शर्मा, विक्रमसिंह गुर्जर आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।